

# मनुष्य की बायोलॉजिकल आवश्यकता है 'संवाद' : प्रो. ब्रिज किशोर कुठियाला



भोपाल। कोरोना महामारी ने बता दिया है कि सिर्फ रोटी, कपड़ा और मकान ही मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताएं नहीं हैं। भोजन और प्रजनन के साथ ही संवाद भी मानव की बायोलॉजिकल आवश्यकता है। बिना संवाद के मनुष्य का जीवन संभव नहीं है। यह विचार हरियाणा उच्च शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. ब्रिज किशोर कुठियाला ने व्यक्त किए। वे माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय की ओर से 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता : भारतीय दृष्टि' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए। इस अवसर पर उनकी पुस्तक 'संवाद का स्वराज' का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में राज्य सूचना आयुक्त श्री विजय मनोहर तिवारी उपस्थित रहे और अध्यक्षता कुलपति प्रो. केजी सुरेश ने की।

'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और भारतीय दृष्टि' पर अपने विचार रखते हुए उन्होंने भारतीय वांग्मय के प्रसंग बताए। उन्होंने कहा कि देवर्षि नारद जब महाराज युधिष्ठिर के दरबार में गए तब उन्होंने उत्तर की अपेक्षा किए बिना ही 133 प्रश्न पूछे। इन प्रश्नों में सुशासन के सूत्र हैं। प्रश्न यह है कि एक राजा से प्रश्न पूछने का अधिकार देवर्षि नारद को किसने दिया? जबकि उस समय तो कोई सूचना का अधिकार कानून भी नहीं था। इसी तरह जब श्रीकृष्ण ने मृत्युलोक को छोड़ने का निश्चय किया तब उनके मित्र उद्धव ने अनेक प्रश्न किए। इन प्रश्नों के उत्तर से पता चलता है कि जीवन कैसा होना चाहिए। श्री कृष्ण से प्रश्न करने का अधिकार उद्धव को किसने दिया? यह प्रश्न-उत्तर लोक कल्याण की भावना से पूछे गए। संवाद के प्रति भारतीय दृष्टि लोक कल्याण की है। प्रो. कुठियाला ने बताया कि श्रीमद् भगवत गीता के अनुसार भारतीय दृष्टि में संवाद में अधिकार की भावना से अधिक मर्यादा की बात है। समाज को लाभ पहुँचाना ही वाणी का तप है।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि श्री विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि सामान्य तौर पर हम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को संवैधानिक अधिकारों तक सीमित करके देखते हैं। जबकि अभिव्यक्ति के प्रति भारत की दृष्टि बहुत व्यापक है। विश्व में भारत ही इकलौता देश है जहाँ 'अहम् ब्रह्मास्मि' की घोषणा की जाती है और उसकी स्वीकार्यता भी है। आत्मा भी ब्रह्म है और ज्ञान भी ब्रह्म। जो ब्रह्म मेरे भीतर है, वही तुम्हारे भीतर। भारत के लोगों ने इस अभिव्यक्ति को पेड़ों, नदियों और पर्वतों तक में किया है। श्री तिवारी ने कहा कि भारत में ऐसी घोषणाएं करने वालों के विरुद्ध कभी फतवा जारी नहीं किया गया। भारतीय दर्शन सब प्रकार के विचारों के पाचन का सामर्थ्य रखता है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. केजी सुरेश ने जम्मू-कश्मीर के चुनावों की रिपोर्टिंग का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारी अभिव्यक्ति में भारत के लोकतंत्र की जीत होनी चाहिए। जबकि देखने में आता है कि जम्मू-कश्मीर का प्रकरण हो, कुलभूषण जाधव का प्रकरण हो या फिर सर्जिकल स्ट्राइक, भारत के कुछ मीडिया संस्थानों ने भारत के प्रतिकूल रिपोर्टिंग की। कुलपति प्रो. सुरेश ने कहा कि हमें

संवाद पर पश्चिम के दृष्टिकोण को पढ़ने के साथ ही भारत की संचार परंपरा का भी गंभीरता से अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि दादा माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता एवं साहित्य में हमें भारतीय दृष्टि दिखाई देती है। शिकागो में स्वामी विवेकानंद का ऐतिहासिक व्याख्यान संवाद की भारतीय परंपरा का एक अनूठा उदाहरण है। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता है कि हम लोकतंत्र एवं देश के हित में समाजोन्मुखी संचार व्यवस्था का निर्माण करें।

इससे पूर्व विषय का प्रतिपादन करते हुए विश्वविद्यालय के सहायक प्राध्यापक एवं कार्यक्रम के संचालक श्री लोकेन्द्र सिंह ने कहा कि हमारी परंपरा में है 'संवाद का स्वराज'। यह संवाद ही तो है जो समाज को दिशा देता है। हमारे ग्रंथ क्या हैं? संवाद से उपजे दर्शन। एक ने प्रश्न पूछे और दूसरे ने उनके उत्तर दिए और दर्शन की उत्पत्ति हो गई। उन्होंने कहा कि संवाद का उद्देश्य समाधान होना चाहिए। लोक हित होना चाहिए। नये ज्ञान का सृजन होना चाहिए। लेकिन बाह्य विचारों के प्रभाव में आकर संवाद की यह परम्परा अपना हेतु खो बैठी है। उद्देश्यविहीन हो गई है। इस अवसर पर विमोचित पुस्तक 'संवाद का स्वराज' की संक्षिप्त जानकारी शोधार्थी अमरेन्द्र आर्य ने दी। स्वागत उद्बोधन डीन अकादमिक प्रो. पी. शशिकला ने दिया। आभार प्रदर्शन कुलसचिव प्रो. अविनाश वाजपेयी ने किया।

कार्यक्रम में भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जयंत सोनवलकर, सांची विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीरजा गुप्ता, अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. खेम सिंह डहेरिया, शुल्क विनियामक आयोग के अध्यक्ष प्रो. रवीन्द्र कान्हेरे, एलएनसीटी के कुलपति प्रो. नरेन्द्र थापक, आरकेडीएफ के कुलपति डॉ. एसके सोहनी एवं आईसेक्ट के प्रतिकुलपति प्रो. अमिताभ सक्सेना सहित अन्य विश्वविद्यालयों के कुलपति, कुलसचिव एवं अन्य अधिकारीगण सहित शहर के गणमान्य नागरिक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कुलसचिव

(डॉ. अविनाश वाजपेयी)